पावस गीत एवं दोहे

डॉ. दादूराम शर्मा
सिवनी (म.प्र.) 480661

वर्षा के दोहे

चंडकरों से तपन की देख धरा संतप्त,
छाए व्यापक छत्र–से नभ में जलधर दृप्त।।1।।
ग्रीष्म दुःशासन ने हरे भू–द्रुपदा के चीर
उसे डपट पट हरित ले प्रकटे वारिद वीर।।2।।
पीड़ित कर चर–अचर को अत्याचारी सूर्य
छिपा भीरू–सा जा कहीं सून मेघों का सूर्य।।3।।
देख घिरे नभ में जलद सुन घन–गर्जन घोर
केकारव कर नाचते पर फैलाकर मोर।।4।।
कभी हिरण, हाथी कभी विविध रूप घन धार
कभी कृष्ण शिव राम तो कभी पर्वताकार।।5।।
प्यास–त्रास हर बरसकर भरते सर–सरि–कूप
शस्य–श्यामला भू करें ये घनश्याम अनूप।।6।।
उमड़–घुमड़ झुक–झूम घन बरसें मूसलधार
होते दृश्य अदृश्य सब रूक जाता संचार।।7।।
बरस–बरस चल दूर अति होकर श्रान्त प्रकाम
गिरिश्रृंगों पर वारिधर करते हैं विश्राम।।8।।
गरज–घुमड़ जाते चले या कि गिरते गाज
बेपानी बादल हुए नेता–गण–से आज।।9।।
रामगिरि के शिखर पर बैठा यक्ष उदास
दूत बना भेजे किसे घन न घिरे आकाश।।10।।
भूदेवी का नीरधर करें सतत अभिषेक
उनका जय–जयकार मिल करें उल्लसित भेक।।11।।
उपल वृष्टि कर शिशिर में फसलें करते नष्ट
व्यर्थ बरसते या कि जो जलद आज अदृष्ट।।12।।
भू प्यासी तज शस्य पर करते उपल प्रहार
मत्त मेघ नग–सिंधु पर बरसाते जलधार।।13।।
निर्जल नीरद देख नभ क्यों भरते हो आह?
कर पर्यावरण–असंतुलन काँटें रूँधे राह।।14।।
छिद्र ओजोन पर्त का बढ़े बढ़ाए ताप
संतुलन कर्ता घन बिना कौन हरे जगताप?।।15।।
भूख–प्यास से भूसुता की लख व्याकुल देह
पान कराती पयोधर माँ वर्षा सरस्नेह।।16।।
सद्यःस्नाता चिकुर से चुवा रही जलधार
वर्ष वामा उर लसे वक–अवली सितहार।।17
इन्द्रगोप रक्तिम अधर नग उर निर्झर हार
हरित अम्बरा धरा का नदियाँ यौवन ज्वार।।18।।
ग्रीष्म–महिष–दलनी हुई मेघ गयन्द सवा
स्वागत में उसके सजा सुरधनु अम्बर–द्वारा।।19।।
रवि–शशि भी तमतोम में कर न सकें पथशोध
वर्षा ने सबके किए पग–पग पर गतिरोध।।20।।
घनावरण में छिपाकर चन्द्रवदन मृदु गात
अगणित जुगनू दीप ले, ढूँढ़े प्रिय को रात।।21।।
भरे न सर–सरि कूप सब बीत गया आषाढ़
सूखा कहीं तो आ रही कहीं विनाशक बाढ।।22।।
कृष्ण जन्म ने धरा के काटे क्लेश समस्त
लाया दिवस स्वतंत्रता यह पन्द्रह अगस्त।।23।।
गणेश चतुर्थी कर रही हम सब का आह्वान
भेद भूल हिल–मिल करें भारत–हित–संधान।।24।।
अनावृष्टि–अतिवृष्टि से मचता हाहाकार
खोले अंधविकास ने खुद विनाश के द्वारा।।25।।

पावस–गीत

ये घुमड़ते मेघ श्यामल,
चण्ड किरणों से तपन की देखकर अभितप्त भूतल
छा गए वन छत्र व्यापक कर रहे हैं छाँव शीतल।
कारूणिक बरसा रहे जल या कि आँसू धार अविरल।
चर–अचर की तृषा हर भर सर–सरित् का रिक्त आँचल
तृषित चातक चंचुपुट में छोड़ते हैं स्वाति का जल
ग्रीष्म से उजड़ी धरा को कर रहे हैं शस्य–श्यामल।
प्रकृति द्वेषी मनुज ने अब प्रकृति को ही दिया दल–मल
आश्वासनी नेतागणों से मेघ भी अब हुए निर्जल
वज्र–करकापात थोथी गर्जना से भरे बादल।
ये घुमड़ते मेघ श्यामल।।